



ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती

राकेश कुमार*, हरदेव राम** और राजेश***

॥ भारत एक कृषि प्रधान देश है व कुल सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 19.9 प्रतिशत है। ग्रामीण क्षेत्रों की आजीविका में कृषि का अहम महत्व है तथा 60-70 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है। वर्ष 1956-57 में दालों की उपलब्धता 72.30 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन थी। यह वर्ष 2020 में घटकर लगभग 47.90 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन हो गई है, जो कि गंभीर चिंता का विषय है। शाकाहारी मनुष्य के भोजन में प्रोटीन की आपूर्ति का प्रमुख स्रोत दालें ही हैं। संतुलित भोजन में दाल के महत्व एवं वर्तमान में इनकी कम उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए दलहन उत्पादन को बढ़ावा देना समय की मांग है। ॥

दलहन उत्पादन को बदलते परिवेश में मानव पोषण, पशुधन आहार, पर्यावरण तथा मृदा उर्वरता का टिकाऊ स्रोत कहा जा सकता है। रबी फसलों की कटाई मार्च-अप्रैल तक हो जाने के बाद खरीफ फसलों की बुआई तक किसानों के खेत 65-70 दिन खाली रहते हैं तथा किसान खरीफ फसलों की बुआई के लिए इंतजार करते हैं। इसकी खेती खरीफ व ग्रीष्मकालीन दोनों मौसम में की जाती है।

गुणवत्ता एवं उपयोगिता

मूंग भारत की बहुप्रचलित और

*पीएच.डी. शोध छात्र; **वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान अनुभाग, भाकृअनुप-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल-132001 (हरियाणा); ***एस.टी.ए., भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली-110012

लोकप्रिय दालों में से एक है। यह दाल बहुत हल्की तथा शीघ्र पचने वाली होती है। मूंग का उपयोग दाल के अलावा नमकीन, मिष्ठान और पापड़ बनाने में किया जाता है। इसकी फसल हरी खाद के रूप में तथा पशुओं के हरे चारे के लिए भी ली जाती है।

जलवायु एवं मृदा

ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती के लिए गर्म जलवायु वाले ऐसे क्षेत्र जहां कम सापेक्षिक आर्द्रता और 60-80 सें.मी. वार्षिक वर्षा होती हो, उपयुक्त कहे जा सकते हैं। इसकी अच्छी वृद्धि के लिए 27 से 35 डिग्री सेल्सियस तापमान आवश्यक है। उचित जल निकास वाली उपजाऊ दोमट मृदा, जिसका पीएच मान 6.5-7.2 हो, खेती के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है।

बुआई का उचित समय

ग्रीष्मकालीन मूंग की अधिक पैदावार के लिए इसकी बुआई का उचित समय 15 फरवरी से मार्च का अन्तिम पखवाड़ा है।

खेत की तैयारी

ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई के लिये रबी फसलों की कटाई के तुरन्त बाद पलेवा करके भूमि की आवश्यकतानुसार एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करते हैं। इसके बाद 1-2 बार हैरो या देसी हल चलाकर खेत को भुरभुरा तथा पाटे की सहायता से भूमि को समतल व खरपतवाररहित कर लेते हैं।

बीज का उपचार

बीजों का अंकुरण बढ़ाने, भूमि व बीजजनित रोगों तथा कीटों से फसल को बचाने के लिए बीजोपचार एक अति आवश्यक प्रक्रिया है। फफूंदनाशी के रूप में 2-3 ग्राम थीरम या बावस्टिन दवा प्रति कि.ग्रा. बीज के लिए काम में लें। कीटनाशी के रूप में इमेडाक्लोरोप्रिड 3-5 मि.ली. दवा प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। इसके बाद बीजों को राइजोबियम जीवाणु कल्चर से उपचारित करें।

सिंचाई एवं प्रबंधन

ग्रीष्मकालीन मूंग में अधिक तापमान के कारण सिंचाई के लिए ज्यादा पानी की आवश्यकता होती है। अतः कुल 3 से 4 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है। प्रथम सिंचाई बुआई के 20 से 25 दिनों बाद तथा शेष सिंचाइयां 12-15 दिनों के अंतराल पर आवश्यकतानुसार करें। प्रारम्भ के 25-30 दिनों तक खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए। शीघ्र परिणाम के लिए पेन्डीमेथालिन (30 ई.सी.) 0.75-1.0 कि.ग्रा.सक्रिय तत्व 400-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर

सारणी 1. प्रति 100 ग्राम मूंग के दानों में पाए जाने वाले पोषक तत्व

प्रोटीन	23-24 ग्राम
कार्बोहाइड्रेट	62-65 ग्राम
वसा	1.0-1.5 ग्राम
रेशा	3.5-4.5 ग्राम
कैल्शियम	130-132 मि.ग्रा.
मैग्नीशियम	1.0-1.3 मि.ग्रा.
फॉस्फोरस	360-365 मि.ग्रा.
पोटेशियम	1200-1250 मि.ग्रा.
आयरन	6-7 मि.ग्रा.
जिंक	2.5-2.7 मि.ग्रा.
ऊर्जा मूल्य	347-350 किलो कैलोरी

स्रोत: भाकृअनुप-भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर

सारणी 2. ग्रीष्मकालीन मूंग की विभिन्न क्षेत्रों के लिए उन्नत किस्में

मुख्य किस्में	विमोचन का वर्ष	विमोचन करने वाला संस्थान	फसल की अवधि (दिन में)	पैदावार (क्वि./है)	अनुकूल क्षेत्र	विशेषताएं
एस.एम.एल.-668	2002	पी.ए.यू., लुधियाना	60-65	11-12	पंजाब	पीतशिरा मोजेक विषाणु की प्रतिरोधी
एस.एम.एल.-832	2010	पी.ए.यू., लुधियाना	60-65	11-12	पंजाब	श्रिप्स और पीतशिरा मोजेक विषाणु के प्रति सहनशील
आई.पी.एम. 205-7 (विराट)	2010	आई.आई.पी.आर., कानपुर	52-55	12	उत्तर-पश्चिमी मैदानी, मध्य एवं दक्षिणी क्षेत्र	पीतशिरा मोजेक विषाणु प्रतिरोधी
आई.पी.एम. 02-14	-	आई.आई.पी.आर., कानपुर	52	10-12	दक्षिणी क्षेत्र	पीतशिरा मोजेक विषाणु व लीफ कर्ल विषाणु रोग की प्रतिरोधी
आई.पी.एम. 410-3 (शिखा)	2016	आई.आई.पी.आर., कानपुर	65-70	11-12	उत्तर-पश्चिमी मैदानी एवं मध्यक्षेत्र	पीतशिरा मोजेक विषाणु व छाछ्या प्रतिरोधी
पूसा विशाल	2000	आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली	60-65	12-14	उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	पीतशिरा मोजेक विषाणु रोग की प्रतिरोधी
पूसा-9531	2000	आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली	55-60	8-10	मध्यक्षेत्र	पीतशिरा मोजेक विषाणु सहनशील
एम.एच.-318	2015	सीसीएस. एच.ए.यू., हिसार	60	10-12	हरियाणा	पीतशिरा मोजेक विषाणु प्रतिरोधी
एम.एच.-421	2014	सीसीएस. एच.ए.यू., हिसार	60	10-12	उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	पीतशिरा मोजेक विषाणु प्रतिरोधी
एच.यू.एम.-2	2000	बी.एच.यू., वाराणसी, उत्तर प्रदेश	67	10.5	उत्तर प्रदेश	पीतशिरा मोजेक विषाणु मध्यम प्रतिरोधी
एच.यू.एम.-12	2003	बी.एच.यू., वाराणसी, उत्तर प्रदेश	60-60	11.5	उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	पीतशिरा मोजेक विषाणु एवं पत्ती धब्बा रोग प्रतिरोधी
एच.यू.एम.-16	2006	बी.एच.यू., वाराणसी, उत्तर प्रदेश	55-58	10.9	उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	पीतशिरा मोजेक विषाणु प्रतिरोधी

की दर से छिड़काव बुआई के बाद व अंकुरण से पहले (बुआई के अगले दिन) करने से फसल की प्रारम्भिक अवस्था में खरपतवारों की समस्या कम हो जाती है।

बीजदर एवं बुआई

ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई के लिये हमेशा उन्नत किस्म के अच्छी गुणवत्ता के बीज ही बोने चाहिए। ग्रीष्मकालीन मूंग की

शुद्ध फसल के लिए लगभग 25 से 30 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टर पर्याप्त होते हैं। बीज बुआई वाली मशीन द्वारा पंक्तियों में की जाती है, जहां पर पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सें.मी. और पौधे से पौधे की दूरी 10 सें.मी. व गहराई 4-5 सें.मी. रखी जाती है।

खाद एवं उर्वरक

आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा मृदा परीक्षण के आधार पर घटाई या बढ़ाई जा सकती है। सामान्यतः ग्रीष्मकालीन मूंग में 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर देना चाहिये।

फलियों की तुड़ाई एवं कटाई

ग्रीष्मकालीन मूंग की फसल में जल्दी पकने वाली फलियों की 1-2 तुड़ाई कर लेनी चाहिए। इसके बाद जब पौधों की पत्तियां पीली पड़कर सूखने लगें तथा 70-80 प्रतिशत फलियां भूरे से काले रंग की हो जाएं तब फसल की कटाई कम्बाइन हार्वेस्टर अथवा हंसिया द्वारा करनी चाहिए। इसके बाद फसल को 8-10 दिनों तक सुखाकर इसकी गहराई करके दानों को अलग कर लें तथा भूसे को पशुओं को खिलाने के काम



मूंग की फसल में लेते हैं। मूंग के दानों का भंडारण 6 से 8 प्रतिशत नमी पर करें।

उपज

ग्रीष्मकालीन मूंग को उन्नत कृषि क्रियाओं के साथ उगाने पर 8-12 क्विंटल प्रति हैक्टर उपज ली जा सकती है।

समस्या एवं समाधान

- ग्रीष्मकालीन मूंग की देरी से बुआई करने पर किसानों को भारी नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। मानसून की बारिश के समय फसल परिपक्व अवस्था में होती है तथा परिपक्व दाने फलियों के अंदर ही अंकुरित हो जाते हैं।
- देरी से बुआई करने पर पुष्पावस्था में अधिक तापमान के कारण नुकसान होता है। कम फलियां व फलियों में कम दाने बनने जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।